

॥ श्रीः ॥

॥ वातपुरनाथाष्टकम् ॥

- कुन्दसुमबृन्दसममन्दहसितास्यं
 नन्दकुलनन्द भर तुन्दलनकन्दम् ।
 पूतनिजगीत लव धूत दुरितं तं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ १
- नीलतर जाल धर भालहरि रम्यं
 लोलतर शीलयुत बालजनलीलम् ।
 जालनति शीलमपि पालयितुकामं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ २
- कंसरणहिंसमिह संसरणजात-
 क्लान्ति भर शान्तिकर कान्तिझर वीतम् ।
 वातमुख धातुजनि पात भयघातं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ३
- जातु धुरि पातुकमिहातुरजनद्राक्
 शोकभरमूकमपि तोकमिव पान्तम् ।
 भृङ्गरुचि सङ्गरकृदङ्ग लतिकं तं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ४
- पाप भव ताप भर कोपशमनार्था-
 श्वासकर भास मृदु हासरुचिरास्यम् ।
 रोग चय भोग भय वेगहरमेकं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ५

- घोषकुलदोषहर वेषमुपयान्तं
 पूषशत दूषक विभूषण गणाढ्यम् ।
 भुक्तिमपि मुक्ति मति भक्तिषु ददानं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ६
- पापक दुराप मति तापहर शोभ-
 स्वापघन मामतदुमापतिसमेतम् ।
 दूनतर दीन सुख दानकृतदीक्षं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ७
- पाद पत दादरण मोद परिपूर्णं
 जीव मुख देवजन सेवनफलाङ्घ्रिम् ।
 रूक्ष भव मोक्षकृत दीक्षनिज वीक्षं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ८
- भृत्यगणपत्युदित नृत्युचित मोदं
 स्पष्टमिद मष्टक मदुष्टकरणार्हम् ।
 आदधत मादरद मादिलयशून्यं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदब्जे ॥ ९

श्री पैङ्गनाडु गणपतिशास्त्रिविरचितं श्रीवातपुरनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

